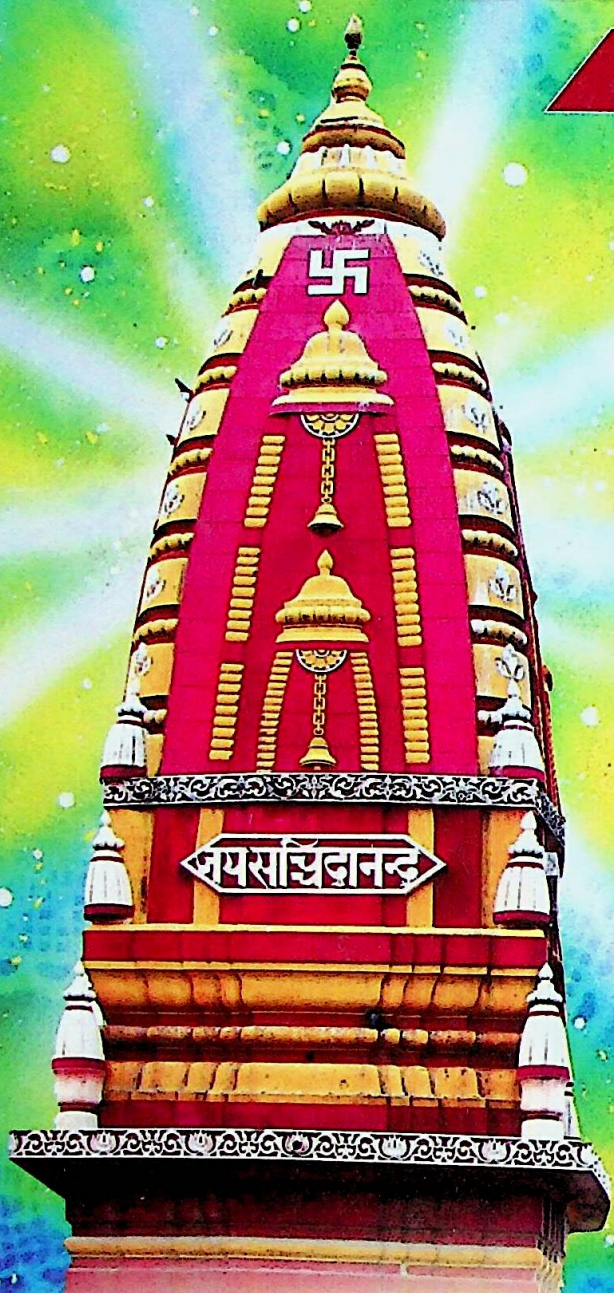


आत्म वित्तन, आत्म बोध एवं आत्म पोषण
का अद्वैत धारा प्रवाह

श्री अनन्त संदेश

मई, 2014
ज्येष्ठ विशेषांक



श्री श्री 1008 श्री स्वामी अद्वैतानन्द पुरी जी महाराज (दादा गुरुदेव) जी के 168वें जन्मोत्सव की श्री छपराधाम एवं कुरुक्षेत्र आश्रम कुछ दिव्य झलकियाँ



वर्ष 1, अंक 9, मई 2014

आत्म चिंतन, आत्मबोध एवं आत्म पोषण

का अद्वैत धारा प्रवाह

श्री अनन्त सन्देश

ॐ मंगलाचरण ॐ

मोक्षस्य न हि वासीऽस्ति न ग्राम्यान्तरमेव वा ।

अज्ञानहृदयग्रन्थिनाशो मोक्ष इति स्मृतः ॥

अर्थ : मोक्ष का किसी लोकान्तर में, गृह या ग्राम में निवास नहीं है, किन्तु अज्ञानरूपी हृदयग्रन्थि का नाश ही मोक्ष कहलाता है ।

भावार्थ : जो चैतन्य आत्मा में विश्राम कर, ठहर गया है वही मुक्त है । सभी कर्म शरीर व मन के हैं । जो शरीर एवं मन के प्रति आसक्ति रखता है वह जो भी कर्म करता है वह बन्धन का कारण है । आत्मा का कोई बन्धन नहीं है । वह केवल दृष्टा है, कर्ता है ही नहीं । दृष्टा कर्म बन्धन में नहीं बन्धता । सभी भोग, कर्म, अहंकार, लोभ आदि शरीर व मन के धर्म हैं, आत्मा के नहीं । जो अपने को पहचान कर, आत्मा तत्त्व का बोध करके, शरीर से अपना सम्बन्ध छोड़ देता है वही मुक्त है अर्थात् कामनाओं सहित मरना मृत्यु है और कामना रहित मरना, मोक्ष है ।

- संस्करण : वर्ष 1, अंक 9, मई 2014, बैसाख मास सम्बत्सर 2071
- अधिष्ठाता : श्री श्री 1008 श्री स्वामी स्वरूपानंद पुरी जी महाराज ।
- प्रेरणा प्रदाता : श्री श्री 1008 श्री स्वामी अनन्त प्रकाशानन्द पुरी जी महाराज ।
- संस्थापक एवं संरक्षक : परम श्रद्धेय संत प्रकाश पुरी जी महाराज एवं संत अगम पुरी जी महाराज ।
- मुख्य संपादक : संत संतोष पुरी जी ।
- संपादक : श्री चन्द्र प्रकाश धमीजा ।
- सह-संपादक : अमन खुग्गर ।
- मुद्रक : क्रेजी ऑफसेट प्रिंटर्स, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
- RNI Number : HARHIN/2013/54189
- Postal Licence. No.: HR/KKR/176/2014-2016
- सदस्यता शुल्क :

भारत में :

एक प्रति : 15 रुपये

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये

विदेश में :

वार्षिक शुल्क : 1500 रुपये

अनुक्रमणिका

1. सम्पादकीय - सन्त संतोष पुरी जी	3
2. श्री अद्वैत चरित मानस	5
3. श्री स्वरूप सरिता	7
4. श्री अनन्त दर्शन - भक्त मुल्क राज पोपली	9
5. भजन - चन्द्र प्रकाश धमीजा	12
6. अलौकिक गीता ज्ञान	13
7. अमृत प्रवचन - संत प्रकाश पुरी जी महाराज	14
8. मैं कौन हूँ - संत अगम पुरी जी महाराज	17
9. योग क्या है? - मदन लाल गाबा	20
10. प्रभु के प्रति प्रेमभाव की अभिव्यक्ति-प्रार्थना - संत अराधना पुरी	23
11. भजन - चन्द्र प्रकाश धमीजा	24
12. प्रभु-प्रेम पियुश - संत निरंतर पुरी जी	25
13. श्री अनन्त पर्व पत्रिका - महात्मा सर्वानन्द पुरी जी	28
14. पारस-मणि की प्राप्ति - चन्द्र प्रकाश धमीजा	29
15. आश्रम समाचार - दासनदास अमन खुगार	33
16. अद्भुत संस्मरण - सुरेश डावर (स्किन्दु)	36
17. त्रिवेणी - डॉ. जीतेन्द्र सैनी	38

स्वामित्व

कार्यालय श्री अनन्त संदेश
श्री अद्वैत स्वरूप अनन्त आश्रम
श्री अनन्त मार्ग, राजिन्द्र नगर, कुरुक्षेत्र

सम्पादकीय...



श्री गुरुचरण अनुरागियो,

हमारी संस्कृति अपने आँचल में कितना कुछ समेटे हुए है, इसका हमें अन्दाजा नहीं है। हमें तब पता चलता है जब कोई इसके बारे में जानकारी देता है। जानकारी तब मिलती है जब हम इतिहास के पन्नों को पलट कर देखते हैं। जिस प्रकार पृथ्वी के गर्भ में कितना कुछ छिपा होता है परन्तु प्राप्त तो खुदाई करने से ही होता है। इतिहास को आधार बनाकर यदि हम समझें तो लगता है हर दिन जैसे एक नई प्रेरणा लेकर आने वाला है। पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज, आदि गुरु शंकराचार्य जी, रामानुजाचार्य जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी एवं महात्मा बुद्ध जी, इन सभी महापुरुषों ने मध्य अप्रैल से मध्य मई के अन्तराल में अपनी स्वर्णिम रश्मियों से इस पृथ्वी को आलोकित किया। श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज जी ने जहाँ 'तेरा भाणा मीठा लागे' यानि 'राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है' का सन्देश सभी गुरुमुखों तक पहुँचाया, वहाँ श्री गुरु अमरदास जी ने गुरुसेवा का पाठ सभी को पढ़ाया। श्री गुरु अंगद देव जी जहाँ पूरी तरह से गुरुभक्ति में सराबोर रहे वहीं आदि गुरु शंकराचार्य जी ने अद्वैत धारा में सभी नज़दीक आने वाले जनों को स्नान करवाया, जो कि अद्वैतवाद के आदि प्रवर्तक हैं।

केरल प्रदेश के पूर्णानदी के तट पर कालन्दी गाँव में बड़े विद्वान और धर्मनिष्ठ श्री शिवगुरु और उनकी धर्म पत्नी सुभद्रा रहते थे। भगवान के अनन्य भक्त थे। बड़ी लम्बी साधना पूजा के बाद इस दम्पति को वृद्धावस्था में भगवान शंकर की कृपा से एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और इसका नाम भी शंकर रखा गया। बालक शंकर के रूप में एक महान विभूति ही अवतरित हुई थी। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि बालक माता से पुराणों की कथा सुनकर कण्ठस्थ करने लगा। विद्या अध्ययन के बाद जब सन्यास लेने की इच्छा

व्यक्त की तो माता ने आज्ञा नहीं दी और बालक बिना आज्ञा के सन्यास लेना नहीं चाहता था। एक दिन नदी पर स्नान करने के लिए गया तो एक पांव मगरमच्छ ने पकड़ लिया। पुत्र को संकट में देख माता होशो हवास खो बैठी, थोड़ी सुधि आने पर हाहाकार करने लगी कि कोई मेरे बालक को बचाओ। बालक शंकर ने कहा कि माँ यदि तुम मुझे सन्यास की आज्ञा दे दो तो मगर मुझे छोड़ देगा। माँ ने तुरन्त आज्ञा दे दी, मगरमच्छ ने बालक को छोड़ दिया। इस तरह से माँ की आज्ञा पाकर बालक शंकर आठ वर्ष की ही आयु में घर से निकल पड़े। कहते हैं 'हिम्मते मर्द, मददे खुदा'। कालान्तर में वही बालक शंकर, आदि गुरु शंकराचार्य के नाम से विख्यात हुए। छोटी अवधि में ही चारों दिशाओं में प्रेमाभक्ति का नाद "भज गोविन्दम् भज गोविन्दम् गोविन्दम् भज मूढमते" बजाते हुए ये ज्योति उस महाज्योति में विलीन हो गई।

इसके बाद महात्मा बुद्ध का पृथ्वी पर पदार्पण भी अद्वितीय मिसाल है। राजसी सुख-वैभव की जंजीरों जिनको नहीं बाँध सकी। माता-पिता, पत्नी का, पुत्र का मोह त्याग कर जो निर्बाध गति से चल पड़े उस रास्ते पर जिसकी मंजिल परमात्मा थी, और उन्होंने अपने लक्ष्य को पाया। बुद्धत्व को प्राप्त होने के बाद संसार को भी वही शरणागति का रास्ता दिखाया। वो अपने उपदेशों में अक्सर कहा करते थे, "व्यक्ति को संसार में ऐसे रहना चाहिए जैसे दाँतों के बीच में जीह्वा रहती है, स्वाद भी लेती है और अपना बचाव भी करती है और इसमें लिप्त नहीं होती।" इस संसार से विदा होते समय उन्होंने अपने प्रमुख शिष्य आनन्द को कहा कि, "देखो मेरा मुँह, मुँह में एक भी दाँत नहीं है केवल जीह्वा बची है। तुम्हें भी संसार में इसी तरह विनम्र बन कर रहना है।"

इन सभी महापुरुषों के जीवन से यदि हम एक-एक कण भी लेते जाएँ तो हमारा जीवन उस सुगन्ध से सुवासित हो सकता है। अन्त में सभी महापुरुषों के चरणों में नमन करते हुए ये प्रार्थना करे कि वो अपनी रहमत की नज़र हम जीवों पर बनाए रखें।

—सन्त सन्तोष पुरी।

श्री अद्वैत चरित मानस

गतांक से आगे.....

उस किसान ब्राह्मण ने श्री परमहंस दयाल जी की ओर न तो कोई ध्यान दिया और न ही कोई बातचीत की। वह आदमी सत्संगी दिखाई नहीं देता था और कुछ सख्त मिजाज का प्रतीत होता था। जब वर्षा रुकी तो कुछ पुरुष व नारियाँ कुएं पर पानी लेने के लिए आए। लेकिन किसी ने भी उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया और आप वहीं भीगी हुई एक लंगोटी पहने रहे।



संयोगवश, कुछ देर में एक सिपाही जो कि सरकारी कर्मचारी था उस जमींदार ब्राह्मण के नाम एक न्यायिक आदेश लेकर आ पहुँचा। उसने उस जमींदार को खूब डराया धमकाया और उसे पकड़ कर ले जाने को तैयार हो गया और कहा कि तुम्हें अदालत में पेश होने के लिए ले कर चलना है। उस जमींदार ने भरसक प्रयास किया कि किसी तरह वह सिपाही शांत हो जाए और उसे 15 रुपये नकद भी देने चाहे लेकिन वो सिपाही न माना और जबरदस्ती उसे खींच कर ले जाने की जिद करने लगा।

श्री परमहंस दयाल जी महाराज ने देखा कि इतना गिड़गिड़ाने के उपरान्त भी वह सिपाही अपनी जिद से बाज नहीं आ रहा तो आपको जमींदार की ऐसी हालत पर रहम आ गया। आपने सिपाही से कहा कि दिखाओ, ऐसा कौन सा हुक्मनामा लेकर आए हो, जरा हम भी देखें। सिपाही ने सोचा कि आप केवल अनपढ़ व्यक्ति हैं - क्या समझेंगे। इसलिए व्यंग्य में वह आदेश आपके हाथ में दे दिया। उसमें लिखा था कि “अमुक आरोप में तुम्हारा न्यायालय में उपस्थित होना आवश्यक है। अगर दो दिनों के अन्तराल में उपस्थित नहीं होंगे तो आप पर जुर्माना किया जाएगा।”

आपने यह सारा म... सिपाही को पढ़कर सुना दिया और कहा कि इस आदेश में आपको ... देनी थी कि दो दिन में हाजिर होना है

अतः आपने सूचित कर दिया है अब जाओ।

यह सुनकर जर्मींदार की खुशी का ठिकाना न रहा। फिर तो उस जर्मींदार ने आपकी ऐसी सेवा की जैसे शिष्य गुरु की करता है और आत्मज किसी बुजुर्ग की करता है। आपके तापने के लिए अंगीठी सुलगा दी, लंगोट धोकर सुखा दिया, बड़ी औपचारिकता से बिछौना बिछाया। मखमल आदि ओढ़ने को लाया। पूरियाँ, आचार और भैंस का दूध दही आदि खाने को लाया। उस सिपाही की ऐसी उपेक्षा की कि खाने तक को नहीं पूछा। आपको लगा कि जर्मींदार की हम पर तो कृपा हो गई लेकिन उस सिपाही पर अत्याचार हुआ जो कि अनुचित है। मुफ्त में उसका दिल दुखेगा। आपने जर्मींदार को समझाया कि इन लोगों का तो पेशा है। बहुत समझाने बुझाने पर ही उसने सिपाही को पानी तम्बाकू आदि की पेशकश की। लेकिन वह सिपाही के जुल्म से बहुत परेशान था इसलिए खाना इत्यादि नहीं दिया। आपको उस पर तरस आया और आपने ही उसे अपने खाने में से खाना और ओढ़ना बिछौना दिया।

हो भला या हो बुरा, अगरचे इन्सान हैं।

पर सभी से प्रेम करना, सन्त का पैगाम है।।

ब्राह्मण जर्मींदार के बहुत जिद्द करने पर आप नौहट्टा गाँव में दो दिन तक रुके। जब विदा होने लगे तो गाँव के लोग आपको पालकी पर बिठा कर विदा करने आए। कुछ दूर जाकर आपने पालकी वापिस भेज दी। अभी दो कोस तक पैदल चले होंगे और आपने हर भार से मुक्त होने की सोची और अपना लंगोट भी उतार कर फेंक दिया तथा बिल्कुल नग्न अवस्था में हो गए।

ना उल्टा है ना सीधा है, हरि बक्शा जो जामा।

सुन्दर वस्त्र देने वाले, तोहि बार-2 प्रणामा।।

सन्त फरमाते हैं -

माटी ओढ़ना, माटी बिछौना, माटी का सिरहाना है।

माटी का कलबूत बनाया, माटी में मिल जाना है।।

क्रमशः

श्री स्वरूप सरिता

गतांक से आगे...

बात उन दिनों की है जब घर में उत्सव का माहौल था और आपके बड़े भ्राता, रामजीवामल के विवाह की तैयारियां चल रही थी। काफी सगे-सम्बन्धी समारोह के आयोजन से पूर्व ही गृह में पहुँच चुके थे। शादी विवाह का अवसर हो तो अक्सर घर वालों की जिम्मेदारियां अधिक बढ़ जाती हैं और आपके माता-पिता मेहमानों की आवभगत में रत थे। आपने अपनी माता जी से कहा कि मुझे भूख लगी है, दूध पीना है। माता जी काम में व्यस्त थी तो बेरुखी से टाल दिया कि दूध नहीं है। आपने पुनः दूध पीने के लिए हठ किया, किंतु माता जी ने डांट लगा कर कह दिया, “तुझे कह दिया न दूध नहीं है।” आपने कहा, “रसोई घर में होगा।” माता जी बोली, “जा देख ले रसोई घर में।” माता जी को तो पता था कि रसोई घर में दूध समाप्त हो चुका है इसलिए स्वयं देख कर इन्हें सन्तोष हो जाएगा और यह बार-बार तंग नहीं करेंगे।



उन्हें क्या पता कि आप साधारण नहीं एक अवतारी बालक हैं; जो बात ठान लेते, मनवा कर ही छोड़ते हैं। कोई प्यार से मान जाए तो बेहतर अन्यथा किसी चमत्कार से मनवा लेना आपकी प्रकृति थी। आप रसोई घर में गए और थोड़ी देर में रसोई घर से जब निकले तो बाजू से अपना दूध वाला मुँह साफ करते हुए निकले। साफ करने के बावजूद भी कुछ दूध आप के मुखमण्डल पर लगा हुआ दिखाई दे रहा था। माता जी की दृष्टि अक्स्मात् आपके श्री मुख पर पड़ गई और देख कर स्तब्ध रह गई कि जब रसोई घर में एक बूँद भी दूध की नहीं थी और आपने दूध पिया तो पिया कहाँ से? कहीं कुछ और तो नहीं पी लिया। माता जी को विस्मित देखकर

आपने तुरन्त उनकी चिन्ता का निवारण किया और कहा, “आप तो कह रही थी कि घर में दूध नहीं है जबकि रसोई घर में तो दूध ही दूध भरा पड़ा है।” भागी-2 माता जी रसोई घर में गई तो और हैरान हो गई। वहाँ जितने भी बर्तन, पतीले, बाल्टियाँ आदि थे सबमें दूध भरा हुआ था। विस्मित होकर सोचने लगी कि न तो इतना दूध मँगवाया गया था और न ही कोई देने के लिए आया था। इतना दूध आया तो आया कहाँ से?

अभी इसी असमंजस में पड़ी थी कि आप छोटी सी एक खाली पतीली उठा कर ले आए और माता जी से फरमाने लगे - इतने सारे बर्तन वैसे ही खराब कर रखे हैं जबकि सारा दूध तो इस एक ही पतीली में आ जाएगा। क्यों ना सारा दूध इस एक बर्तन में डाल दें? माता जी ने डांटते हुए कहा, “मेरे को परेशान मत कर पहले ही मैं इतनी परेशान हूँ, अब ये छोटी सी पतीली उठा कर ले आया है, भला इतना सारा दूध इस पतीली में कैसे आ जाएगा?” बोले, “माता जी, आप दूध डालो तो सही।” माता जी परेशान होकर बोली, “अगर नहीं आया तो मैं तेरे सिर में उड़ेल दूँगी।” यह कह कर उस पतीली में दूध डालना आरम्भ कर दिया। डरते-2 सभी बर्तनों का दूध उस छोटी सी पतीली में डाला तो माता जी को कुछ समझ नहीं आया कि यह पतीली कोई जादुई पतीली है जो इतना सारा दूध इसमें समा गया। आप माता जी को देखकर आने वाले विभिन्न भावों का आनन्द उठाते रहे। यह विचित्र लीला देखकर माता जी स्तब्ध रह गई। पुराने समय में विवाह आदि पर मेहमान कई कई दिन रुकते थे। माता जी उसी पतीली में से दूध निकाल-निकाल कर मेहमानों की सेवा में लगाती रही फिर भी पतीली ज्यों की त्यों भरी रही। इस प्रकार के विचित्र चमत्कार देखकर टेरी वासियों के हृदय प्रभु प्रेम में रंगने लगे।

क्रमशः

श्री अणन्त दर्शन (धारा प्रवाह भाग-4)

रुहानी शहशाह स्वामी श्री अणन्त प्रकाशानन्द पुरी जी महाराज

त्रिकालदर्शी ने शाहबाद (मारकण्डेश्वर) में चंद महीने अपनी आलौकिक शक्ति का अलख जगाते हुए अनेकों रूहों का उद्धार किया। किन्तु अपने सद्गुरु की गुरु भक्ति से अत्याधिक आत्म विभोर रहते। आरम्भ से ही आप का सद्गुरु के प्रति गहन समर्पण था और सदैव सर्वस्व बलिदान करने के लिए लालायित रहते थे। प्रायः कहते थे -



ऐ तन मेरा चश्मा होवे मुर्शिद देख न रज्जां हू।

लूं-लूं दे मुड़ लख-2 चश्मा इक खोला इक कज्जां हू।।

ऐन्हां डिट्ठेयां मैंनू सबर न आवे होर किदे वल भज्जां हू।

मुर्शिद दा दीदार जो बाहू लख करोड़ां हजां हू।।

शीघ्र ही आप श्री ने अपने सन्त शिष्यों के साथ अपने सद्गुरु प्रकाशपुंज श्री स्वामी स्वरूपानन्द पुरी जी महाराज के समाधि स्थल नंगली साहब जिला मेरठ (उत्तर प्रदेश) की ओर प्रस्थान किया। जैसा कि विदित है आप श्री ने अपने अन्य गुरुभाईयों, सन्तों, शिष्यों व संगत को साथ लेकर सद्गुरु के समाधि स्थल को एक अद्भुत रूप प्रदान करने का पुनीत कार्य आरम्भ कर दिया।

इसी पुनीत कार्य के साथ-2 आप श्री ने 1948 में मुजफ्फरनगर में नगर से दूर गाँधी कॉलोनी में अपनी सन्त कुटिया की स्थापना की। आत्मानुभूति द्वारा अद्वैतवाद के शाश्वत् मूल्यों की खोजबीन व अपने सद्गुरु की शिक्षा दीक्षा का अनुमोदन करते हुए जनसाधारण को मन, वचन व कर्म की शुद्धता का प्रेरणादायक संदेश देते। उस समय आवागमन के साधनों का अभाव था। सकौती टांडा रेलवे स्टेशन से आप श्री नंगली साहब निर्माण कार्य देखने हेतु सात मील खेतों के बीचों बीच पैदल ही जाया करते थे। किन्तु आप श्री के दिल में देश विभाजन के कारण बिछुड़ी संगत के प्रति प्यार उमड़-उमड़

कर आने लगा। मन में एक उमंग पैदा होती और आप श्री ने बिछुड़ी संगत व भक्तजनों को ढूँढने का भारत अभियान आरम्भ कर दिया जो एक विकट कार्य था क्योंकि न जाने कौन कहाँ किस प्रान्त में पहुँच गया था। सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया था। उनके असीम प्यार ने हिलोरे लीं, तो उन्होंने बिछड़े हुए भक्तजनों को भारत में ढूँढने की प्रेम यात्रा शुरू कर दी। शीघ्र ही राजस्थान प्रान्त के अलवर में अपने असंख्य रिश्ते-नातेदारों के साथ जा बसे प्रिय गुरु भाई चौधरी बंजारा लाल पोपली का पता लगा लिया। उन्हें साथ लेकर दुःख जाल में फंसी, पुनः स्थापित होने के लिए संघर्ष कर रही, अपनी प्यारी संगत को गाँव-2 व शहर-2 में ढूँढने का अभियान शुरू कर दिया। महीनों तक इसी अभियान में अपनी संगत को सत्संग द्वारा सद्गुण व आत्म-विश्वास का अभय दान प्रदान करते रहते थे। कुछ वर्षों के अंतराल में अधिकांश बिछड़े भक्तों को खोजकर अनगिनत आध्यात्मिक शिष्यों एवं श्रद्धालुओं की विशाल संगत तैयार कर ली। उनके प्रवचनों एवं उपदेशों ने दुःख की घड़ी से उबारने में रामबाण का कार्य किया। इस प्रकार मुजप्फरनगर को 12 वर्ष तक लोक-कल्याण की अपनी गतिविधियों का केन्द्र रखा। गहन तप से आध्यात्म की उच्च कोटि प्राप्त की और स्वामी जी की उपाधि प्राप्त की। महिला उद्धार के लिए भेंटाचारी कन्याओं को शिक्षित कर संत उपाधि प्रदान की। उनकी अलौकिक ज्योति के प्रकाश स्वरूप इस कुटिया में असंख्य लोगों का तांता लगा रहता था। श्रद्धालु मन्तें मांग कर जाते और उनकी मुरादे पूरी होती थी। उनके सान्निध्य में रहने वाले संत व भक्तजन आज भी उनकी दिव्य शक्ति के चमत्कारों के प्रसंगों का बखान करते हैं। ऐसा ही एक प्रसंग प्रसाद रूप में वर्णन करना यहाँ न्याय संगत होगा।

स्वामी जी उन दिनों मुजप्फरनगर कुटिया में रहते हुए 8-10 दिन बाद सायंकाल जंगल की ओर भ्रमण करने के लिए जाया करते थे। एक बार भ्रमण करते हुए जंगल के बीच में गुजर रहे थे। उनके प्रिय शिष्य महात्मा ब्रह्मध्यानानन्द व महात्मा सुखशब्दानन्द जी भी साथ थे। रास्ते में एक काला नाग उनके पीछे लग गया और पीछे-2 चलने लगा। प्रायः श्री स्वामी जी गाँव गढ़ी तक भ्रमण के लिए जाया करते थे। काफी रास्ता तय करना अभी और

बाकी था, साथ में चल रहे महात्माओं को शंका हुई और उन्होंने श्री स्वामी जी से इसका जिक्र किया। श्री स्वामी जी की दिव्य दृष्टि तो उस काले नाग को पहले ही पहचान चुकी थी। उन्होंने महात्माओं से कहा कि निर्भय होकर चले आईए और इसे भी आने दो। किसी वक्त यह भी तुम्हारे जैसा ही था। दोनों महात्मा स्तब्ध रह गए। गढ़ी गाँव के निकट जाकर श्री स्वामी जी महाराज चबूतरे पर बैठ गए और काला नाग भी उनके सामने आकर रुक गया। स्वामी जी जोर-जोर से सो-हंग की चोट लगाने लगे, जब तक चोट करते रहे सर्प फन निकालकर सामने बैठा रहा। कुछ समय बाद स्वामी जी उठकर वापिस चल दिए तो काला नाग भी उनके पीछे-2 चलता आया। मुजफ्फरनगर कुटिया के सामने हँड-पम्प के पास आकर स्वयं रुक गए। कुटियावासी एवं आए हुए भक्तजन श्री स्वामी जी को नमन करने के लिए उनकी ओर बढ़ने लगे। स्वामी जी ने उनकी ओर इशारा करते हुए कहा कि आओ-आओ तुम्हें एक चेला और दिखाएँ। स्वामी जी की करुणा का दरिया उमड़ पड़ा और उस काले नाग ने वहीं प्राण त्याग दिए। श्री स्वामी जी ने अपने सिर पर बंधा हुआ कपड़ा उतारा और उस सर्प को उससे ढक दिया और फिर एक खुरपा मंगवाकर कुटिया में एक पेड़ के समीप उसका अन्तिम-संस्कार कर दिया। स्वामी जी ने एकत्रित भक्तजनों को बताया कि यह सर्प पिछले जन्म में महात्मा था और मेरा शिष्य था, इसने बुरा काम किया था और सर्प योनि का श्राप दिया था। आज इसे पहचान लिया और उद्धार कर दिया। यह प्रसंग जहाँ साधू की दिव्य दृष्टि की झलक प्रस्तुत करता है वहीं साधू की करुणा और गुरु, शिष्य के संतापो का किस हद तक हनन कर सकता है, उसको सीमा में नहीं बांधा जा सकता। गुरु भक्ति अनुभूति प्रदान करती है और जन्म जन्मान्तरों के बंधन काट देती है।

क्रमशः (भाग-5)

भक्त मुल्क राज पोपली

(लुधियाना)

भजन

सफल हो जाएगा बन्दे, ये तेरा जन्म ।

कर हरि भजन, कर हरि भजन ।

बाद कई जन्मों के मिलता है ये तन इन्सान का ।

हर घड़ी हर पल में करता चल भजन भगवान का ।।

है यही साधन यही मार्ग है निज कल्याण का,

सौंपता जा सांवरे को अपने सब कर्म - कर हरि भजन

ये जगत करतार का ऐसा बनाया है हुआ ।

हर किसी के दिल में उसने घर बनाया है हुआ ।।

माया के पर्दे में खुद को ही छिपाया है हुआ ।

सतगुरु कर देंगे तेरे दूर सब भरम - कर हरि भजन

तन नहीं इक नाव है ये पार जाना है तुझे ।

भूली बिसरी बूँद सागर से मिलाना है तुझे ।।

इक दिये की लौ को सूरज से मिलाना है तुझे ।

छूट जाएगा ए 'दासा' ये जन्म मरण - कर हरि भजन

तर्ज : करवटें बदलते रहे सारी रात हम-आपकी कसम

-चन्द्रप्रकाश धमीजा

अलौकिक गीता ज्ञान



अध्याय 1 श्लोक 12

तस्य सन्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।

सिंहनादं विनद्योच्चैः शंख दध्मौ प्रतापवान् ॥12॥

अर्थ: उसके पश्चात् कुरुवंश के परम प्रतापी एवं वृद्ध पितामह ने सिंह के समान गर्जना जैसी ध्वनि उत्पन्न करने वाले अपने शंख को उच्च स्वर से बजाया, जिसे सुनकर दुर्योधन को हर्ष हुआ ।

चौपाई -

सिंह गर्जन सा शंख बजाया, जो दुर्योधन के मन भाया ।

महाप्रतापी और बलवान, भीष्म पितामह गए सब जान ।।

भावार्थ: पितामह भीष्म जो कि कुरुवंश के सबसे व्योवृद्ध और परम प्रतापी व्यक्ति हैं । अपने पौत्र दुर्योधन का मनोभाव जान गए हैं और उन्हें दुर्योधन पर स्वभाविक दया आ गई । इसलिए उसे प्रसन्न करने के लिए अत्यंत उच्च स्वर से शंखनाद किया जो उनकी सिंह के समान स्थिति के अनुरूप था । अप्रत्यक्ष रूप में शंख के द्वारा प्रतिकात्मक ढंग से उन्होंने अपने हताश पौत्र दुर्योधन को बताने की चेष्टा की कि उन्हें युद्ध में विजय की आशा नहीं है, क्योंकि दूसरी सेना में साक्षात् भगवान श्री कृष्ण हैं, फिर भी मार्ग दर्शन करना उनका कर्तव्य है और इसमें वो कोई कसर नहीं रखेंगे ।

परम पूजनीय संत प्रकाश पुरी जी महाराज जी के दिव्य उद्गार

एक आध्यात्मिक स्कूल में शिक्षा दी जा रही थी, जहाँ पर पढ़ने वालों के धड़ पर शीश (सिर) नहीं थे। बड़ी हैरानी की बात थी कि उस स्कूल में बिना सिर के शिष्य थे। मतलब ये है कि शीश अर्थात् अहंकार। इसमें अहम् भरा होता है। आध्यात्मिक शिक्षा में अहंकार को अलग रख कर शिक्षा दी जाती है। इसलिए बिना सिर के शिष्य हैं। आम स्कूलों में अगर सबक याद हो जाए तो उसे छुट्टी मिल जाती है पर इस इश्क (आध्यात्मिक प्रेम) के स्कूल का अजब असूल (नियम) देखा है उसको छुट्टी नहीं मिलती जिसे सबक याद होता है।



ईशक के मकतब का, दस्तूर निराला देखा।

उसको छुट्टी नहीं मिली, जिसने सबक याद किया।।

आज श्री महाराज जी ने पाचवां अध्याय पढ़ा- जिसमें सन्यासी और कर्मयोगी का वर्णन था। कर्मयोगी कर्म करता हुआ भी उसमें लिप्त नहीं होता। जिस प्रकार कमल के पत्ते पर जल का प्रभाव नहीं पड़ता।

श्री महाराज जी बताने लगे कि श्री स्वामी जी हम सबको योग-वशिष्ट पढ़ाते थे तो उसमें हे राम! हे वशिष्ट! उसी प्रकार बार-2 आता था जैसे अब आप श्री गीता जी में हे अर्जुन! हे श्री कृष्ण! सुनते हैं। एक दिन श्री स्वामी जी योग वशिष्ट पढ़ते-2 कहने लगे-“मैनुं तां रोज मार पैदी ए”। उन के (श्री स्वामी जी के) ये शब्द कहने पर सारे घबरा गए। श्री महाराज जी ने बताया कि हम तो सोचने लगे कि कोई ऐसा काम तो नहीं हुआ जो स्वामी जी कह रहे हैं। फिर श्री स्वामी जी पूछने लगे-तुसी

वी कदी मार खाई ए। कोई कहने लगा- बहन कोलों, (बहन से), कोई भाभी कोलों। तभी श्री स्वामी कहने लगे, जो हम रोज-2 कथा, महापुरुषों के वचन सुनते हैं, ये मार ही तो हैं, “जो हमें रोज पड़ती है। हमने इस पर अमल करना है, ढीठ नहीं होना।”

श्री स्वामी जी महाराज कई बार ये सुनाते थे -

ऐ मौला! तेरे बुतों से डर लगता है, ये मुहं के बल गिराते हैं।

मौला- “इन गिरे हुए ही लोगों को थाम-2 के ऊपर उठाता हूँ, जो जख्म लगे हैं गिरने से, मैं पट्टी-महरम लगाता हूँ।”

किसी के साथ भी कोई अप्रिय घटना हो जाए तो हम प्रभु को दोष देते हैं। श्री महाराज जी कहने लगे- उस प्रभु को दोष मत देना। हमारे शरीर के पाप तो हम जानते हैं, भोगते हैं। परन्तु भीतर मन से विचारे गए दुष्कृत पाप बनते हैं। जिनका भोग आगे देना पड़ता है और मन से विचारे होने के कारण हम भूल जाते हैं। संत कबीर जी पर मन की दो स्थितियाँ आई जब एक जगह सत्संग में बैठे, राम बुलावा आया तो बोले-

राम बुलाया भेजया, दिया कबीरा रोय।

जो सुख है सत्संग में, सो बैकुण्ठ ना होय।।

और एक जगह मन की स्थिति ऐसी आई ये भी कहा -

जिस मरने से जग डरे, मेरे मन आनन्द।

मरने ते ही पाईए, पूर्ण परमानन्द।।

राजा भर्तृहरि जब सब कुछ त्याग कर गुरु जी के साथ चल पड़े, अपनी पोटली में साने की ईंट छिपा ली। गुरुदेव ने कहा- भर्तृहरि! सब कुछ त्याग दिया ईंट का क्या काम। त्याग दिया तो पूर्ण समर्पित हो जाओ। उस शक्ति पर सर्वस्व लुटा देना। उस अग्नि में सब कामनाओं को डाल

देना। एक भी कामना ना रहने पाए। कोई थोड़ी सेवा करता है, कोई ज्यादा, ये सब उस शक्ति के सामर्थ्य अनुसार ही होता है। ये सोचकर हम अंहकार करें कि आज हमने ज्यादा सेवा की तो गलत होगा। उस शक्ति के बिना इस शरीर की कोई कीमत नहीं। वो सूक्ष्म शक्ति जो इस शरीर में रहती है, उसे पाने के लिए सूक्ष्म होना होगा।

श्री महाराज जी कहने लगे-बस हर समय प्रार्थना करो। सुबह-शाम प्रार्थना कि-मुझे सदा पल-2 आपकी लगन लगी रहे। प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है। प्रार्थना जो सच्चे भाव, श्रद्धा से की जाए तो हमें उस शक्ति तक पहुंचा देती है। तुसी जितना हो सके, ओन्दे ध्यान विच रहो, (उनके ध्यान में रहो) उसके साथ स्वयं को जोड़ो। धर्म से, कर्म से बन्दगी करो गुरुदेव के वचनों की गहराई को समझो।

-परम श्रद्धेय सन्त प्रकाश पुरी जी महाराज।

बोलो श्री नंगली निवासी भगवान की जय

मैंनू तेरे जेहा ना मिलना कोई

तैंनू मेरे जेहे बतरे

ऐना दूर ना करीं मेरे सतगुरु

कि मैं मर जावां बिन तेरे

मैं कौन हूँ

वही जीव पार उतरेगा जो पल-2 स्वयं उसके नाम का सिमरन करता चलता है। उसका बेड़ा पार हो जाता है, चित्तवृत्तियों को भगवान में जोड़ने के लिए मन के भावों को प्रभु के संग जोड़ता है।



उसकी मेहर के बिना यह जीव संसार के बीच कुछ कर नहीं सकता जब कृपा हो जाती है तो वारे न्यारे हो जाते हैं। उसकी धुन में खुद को जोड़ कर देख। तुम्हारे ध्यान को जोड़ने के लिए हाथ को खोलिए, इतने हाथ भगवान की सेवा करेंगे। अपनी जुबान से कहना है, कानों से सुनना है उस आवाज के साथ चित्तवृत्तियों का जोड़ हो जाएगा।

भगवान के आनन्द का झरना इस जीव के संग रहता है। उसमें भीगने से वंचित रहता है। हर वेदशास्त्र में महापुरुषों ने जोड़ने की कोशिश की। उसका आनन्द प्राप्त करके जीवन की सफलता प्राप्त कर लें। महाप्रभु किनारे पर लगाने के लिए आते हैं। हर अवतार में रहस्य होता है वास्तविकता को सन्मुख रख कर हर जीव को जगाया है। बात समझाने पर समझ में आ जाती है। एक शख्स ने सुना था कि महाप्रभु दिल की जान जाते हैं। उनके पास गया जानने के लिए अपने आपको। जिक्र करता रहता हूँ। शुभ कर्मों का संयोग मिल जाता है। फकीरों की संगत भी कुछ ऐसी ही होती है। फकीरों की दुनिया भी अजीब निराली होती है। निराले ही बैठते हैं -

न इज्जत ना शौहरत बड़ी चीज है

ना हकूमत ना दौलत बड़ी चीज है

पास बैठे तो याद आती है खुद

इन फकीरों की सोहबत बड़ी चीज है।

पास बैठने से खुदा की याद आती है। यह जहान उसका बनाया है। कुछ भी बड़ा काम नहीं, चंद मिनट बैठकर विचारों का शोधन हो गया तो सबसे बड़ी चीज हाथों में आ गयी। ये अनमोल घड़ियां परमात्मा की याद में गुजर जाती हैं।

एक शख्स जीवन को जानने के लिए आया। सुन-सुनाकर जीव ज्ञानवान तो हो ही जाता है। नमस्कार किया और कहा महाराज मैं आपके पास यह जानने के लिए आया हूँ कि मैं कौन हूँ? उन्होंने जोर से थप्पड़ लगाया और कहा जा लौट जा। मन में सोचने लगा कि मन की मुराद पूरी होती है कैसे फकीर हैं। मेरे को थप्पड़ लगा दिया, जा लौट जा। वह घबराता हुआ वापिस लौट गया। अकेले में विचार करने लगा मैंने तो कुछ और सुना था। मैं कौन हूँ? यह जानने के लिए आया था, उस चुभन ने उसके हृदय को झकझोर दिया। विचार करता रहा कभी चुभन का एहसास कर रहा है। सोया हुआ जागता है तो काफी आवाज करता है। जहाँ परमात्मा का निवास है वहाँ से आवाज आई कि इसमें जरूर कुछ राज है। वह दूसरे फकीर के पास गया। नमस्कार किया और बैठा। महाराज कृपा कीजिए मैं समझने के लिए आया हूँ कि मैं कौन हूँ? तू फिर आ गया। उन्होंने एक मोटा डंडा उठाया और कहा भाग जा नहीं तो लगा दूँगा। उनकी बात समझ में नहीं आई तो मेरी क्या आएगी। वह लौट गया। लौटने पर भी पल्ले नहीं पड़ा। इधर आया तो थप्पड़ मिला उधर गया तो डंडा मिला खाने को। फिर उसके पास गया तो कहने लगा लौट जा नहीं तो आज जिंदा नहीं छोड़ूँगा। लौट गया। इस बार अक्ल ने काम किया। वहाँ सौभाग्य मिला लौट जाने का मतलब, जहाँ से रूह आई वहीं लौट जा। आँख को बंद करके वापिस लौट जा। तुम्हें रहस्य मिल जाएगा जिंदगी का उन्हीं परमात्मा के पास लौट जाओ। इधर रहूँगा तो मार ही खाऊँगा। मैं कौन हूँ? तो समझना है तो अपने आप में झाँककर देख।

तू उसकी करीबी को हासिल कर तब समझ में आएगा कि मैं सब में रहने वाला परमात्मा हूँ। अगर वो इसमें से निकल गया तो यह शरीर यहीं रह जाएगा। यह भारी लट्ठ के समान हो जाता है। पाँच भौतिक शरीर लट्ठ के समान है उसके नाम की हल्की हवा होती है तो शरीर हल्का रहता है। लौटेगा तो मालूम पड़ेगा मैं कौन हूँ? तू ही तू की जब धुन बजती है। जब शीश कट गया तो बकरे का चाम बिक गया। तब तू ही तू की धुन बजेगी। जो मैं सो तू। मैं उसका अंश हूँ, रूप हूँ, शक्ति हूँ, इंसान की शक्ल भगवान से मिलती है। ईश्वर अंश जीव अविनाशी परमात्मा के करीब लौट आएगा हस्ते कर्म उठेगा। आ गए बेटा गले से लगा लिया तभी जीवन का बेड़ा पार हो जाएगा। अपने हाथों से उठाकर अपनी जोत में समा लेगा। उसका हुक्म होगा तो हमें बना देगा। हम उसकी सेवा में लग जाएँगे। कितने भी जन्म लगा लें एहसान का बदला चुका नहीं पाएँगे। उसी के आनन्द में डूब जाएँगे।

— परम आदरणीय सन्त अगमपुरी जी

प्रेरक प्रसंग

एक बार एक शिष्य अपने गुरु से शिकायत भरे स्वर में कह रहा था, “गुरुदेव आपने ही तो उस दिन कहा था, जो व्यक्ति त्यागी होते हैं और प्रतिष्ठा से दूर भागने का प्रयास करते हैं, सामाजिक सम्मान उनके पीछे-2 दौड़ा आता है। मैं गत 15 वर्षों से अपना सर्वस्व समाज सेवा पर न्यौछावर करता आ रहा हूँ, पर सम्मान मेरे पीछे अभी तक दौड़कर नहीं आया।”

गुरु का उत्तर था, “बात ठीक है, पर तुम्हारी दृष्टि सदैव पाने पर लगी रही, देना तो तुम्हारा नाटक मात्र था।” शिष्य को अपनी भूल समझ में आ गई।

योग क्या है? योग क्यों करें?

यह लेख मैं श्री स्वामी जी महाराज की कृपा से परम पूज्य सन्त प्रकाश पुरी जी महाराज की प्रेरणा से लिख रहा हूँ।

पहला सुख निरोगी काया: वर्तमान काल में स्वास्थ्य रक्षा एक गंभीर समस्या है। स्वास्थ्य की रक्षा के बिना हमारा जीवन आनन्दहीन हो जाता है। हमारे ऋषि मुनि बचपन से स्वास्थ्य की ओर ध्यान देते थे। योगासन विद्या स्वस्थ रहने की प्राकृति विधि है।

आज के भौतिक और व्यस्त जीवन में जिससे भी मिलो, जिसके भी यहाँ जाओ जिससे भी बातचीत करो हर कोई रोगी दिखाई देता है। योग मानव समाज को शरीरिक व मानसिक रूप में स्वस्थ रखने में सक्षम है। योगिक क्रियाएँ करने से हमारा मन शांत हो जाता है और हम अपने सही स्वभाव में आ जाते हैं। हमारे अन्दर कई गुण आ जाते हैं। और हम भीतर से भी धीरे-2 शांत होने लगते हैं। किसी से हम दुर्व्यवहार नहीं करते। योगासन अन्दर के शरीर को भी स्वास्थ्य रखने की क्रिया है। हमारा शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश से बना है।

अल्फा तरंगें हमारे शरीर में तब उठती हैं जब मस्तिष्क शांत और तनाव मुक्त है। जब हमारा मन स्वस्थ है तब हमारे अन्दर सहनशीलता आत्म नियंत्रण इत्यादि गुण सहज में आ जाते हैं। जिस व्यक्ति के पास मानसिक स्वास्थ्य है, वही आदमी सुखी है।

योग समस्त मानव जाति के लिए एक कल्याणकारी संदेश है। इसका कार्यक्षेत्र शरीर, मन और आत्मा है। रोग के समय रोगी का मनोबल गिर जाता है। योग इस मनोबल को बढ़ाता है। योग से हमारी रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है और हमारी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने से रोग हमारे ऊपर हावी नहीं हो पाते। जो दूसरों के सुख में सुखी होता है वह

परमयोगी है।

हमारे शरीर में पाँच कोष होते हैं। अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष एवं आनन्दमय कोष तथा हमारे शरीर में सात चक्र होते हैं। ये चक्र सूक्ष्म शरीर की रीढ़ में होते हैं -

1. मूलाधार चक्र : गुदा मूल से 2 अंगुल ऊपर (पृथ्वी)।
2. स्वाधिष्ठान चक्र : जनेन्द्रिय के पीछे रीढ़ पर (जल)।
3. मणिपुर चक्र : नाभि के पीछे रीढ़ पर (अग्नि)।
4. अनाहत चक्र : हृदय के पीछे रीढ़ पर (वायु)।
5. विशुद्धि चक्र : कण्ठ के पीछे रीढ़ पर (आकाश)।
6. आज्ञा चक्र : भौमध्य पर जहाँ माथे पर बिन्दी या टीका लगाते हैं। (पंख का प्रतीक)
7. सहस्राहार चक्र : ब्रह्मरन्ध्र से ऊपर इस चक्र पर ध्यान आनन्ददायक है।

योग न करने के कारण हमारे शरीर की माँसपेशियों में, नसों में तथा अन्य भागों में एक प्रकार की मैल जम जाती है। मनुष्य के लिए यह विकार विष तुल्य होते हैं। हमारे शरीर में रोगों का कारण विजातीय द्रव्यों का अर्थात् गन्दगी का इकट्ठा होते रहना है। जिससे हमारा शरीर रोगी हो जाता है।

मन के तीन भाग होते हैं। चेतन, अचेतन व अवचेतन। हमारा मन इतना सूक्ष्म होता है। इसकी लम्बाई, चौड़ाई नहीं मापी जा सकती। यह सूक्ष्म तरंगों से बना हुआ है। जहाँ हमारे विचारों का आदान प्रदान होता है। मन के आगे फिर पाँच अवस्थाएँ होती हैं -

1. मूढ : तम प्रधान अवस्था है।

2. क्षिप्त : यह मन की रज प्रधान अवस्था है।
3. विक्षिप्त : यह अवस्था रजोगुण + तमोगुणी दोनों अवस्थाओं का मिश्रण है।
4. एकाग्र : इस अवस्था में मन जिस विषय पर टिका है उसी में लीन रहता है।
5. निरुद्ध : मन की इस अवस्था में केवल संस्कार ही शेष रहते हैं और हमारे चित के शोधन का कारण बनती है। और स्वभाविक श्वास से गहरे लम्बे श्वास लेने लगते हैं और फिर हमारे उत्थान का मार्ग प्रशस्त होने लगता है।

हमारे शरीर का आधार प्राण है। प्राण की कमी से भी रोग उत्पन्न होते हैं। मनोविज्ञानिकों का मत है कि 80 प्रतिशत रोग मन की अशांति से ही पैदा होते हैं। नकारात्मक विचारों के कारण शरीर और मन में तालमेल नहीं रहता। योग द्वारा अपनी मानसिकता ठीक कर सकते हैं। योग करने की चीज है (योगाः कर्मस कौशलम) देखने, सुनने की चीज नहीं।

क्रमशः

मदन लाल गाबा
भारतीय योग संस्थान

ऊँची तेरी शान प्रभुजी
ऊँचा सुँचा तेरा प्यार।
धरती ते सचखण्ड है बनाया
श्री नंगली दरबार

प्रभु के प्रति प्रेमभाव की अभिव्यक्ति-प्रार्थना

हृदय सम्राट प्राणाधार अनन्त विभूषित श्री
नंगली निवासी भगवान जी, श्री स्वामी जी महाराज
और महाराज जी और बाबा जी महाराज जी के चरणों
मे मेरा कोटि कोटि नमन ।



प्रार्थना, प्रेम उस परमात्मा के प्रति जिसने ये
सुन्दर संसार बनाया, जिसने पुष्पो को खिलने की
शक्ति दी, जिसने पुष्पो में खुशबू भरी है जिसने तितलियों के पंखों में रंग
भरे हैं जिसने मोर को नाचना सिखाया है जो सुख दाता है, जो दुख हरता है,
नदियां जिसके चरण धोती हैं, सागर जिसके बलबूते पर लहरों में झूमता है,
मेघ जिसकी शक्ति से गरजते हैं और तपती धरती पर बरसते हैं । प्रार्थना
मन का भाव है, नेत्रों का चाव है जब कोई साथ ना दे अपने भी आंखे फेर
लें, तो वेदना संवेदना से मजबूरी लाचारी घेर ले, सब छोड़ जाएं तो सतगुरु,
देव जी फरमाते हैं कि तब प्रार्थना करो, वो जरूर सुनता है सब की सुनता है
कहते हैं जब किसी का नाम बार-बार बुलाते हैं तो वो एक बार पीछे
मुड़कर जरूर देखता है । इसी तरह परमात्मा भी अपने बच्चों, सेवकों की
जरूर-जरूर सुनता है इसलिए प्रार्थना शब्दों का खेल नहीं है, प्रार्थना
प्रयास है सकारात्मक ऊर्जा को पाने, जीवन को सजाने का । एक साधन है ।
प्रार्थना चेतन मन को अचेतन मन के रूप में सजाने संवारने का साधन है ।
प्रार्थना, आत्मसंयम, आत्मचेतना, आत्म-सूचना, द्वारा परमतत्त्व से जुड़ने
का सक्षम साधन है । हृदय का प्रेम महत्वपूर्ण है प्रभु तक अगर कुछ
पहुंचता है, तो प्रेम भाव ही पहुंचता है । बिना श्रद्धा प्रेम के की गई पूजा में
विधि भी यहीं की यहीं रह जाती है । और शब्द भी धरे के धरे रह जाते हैं ।

खाक मुझमें कोई कमाल रखा है, मेरे दाता मुझे बस तूने सम्भाल रखा है

मेरे ऐबो पर डाल परदा मुझे अच्छो, में डाल रखा है। मेरा नाता अपने से
जोड़ के तूने मुझे हर मुसीबत से, टाल रखा है। मैं तो कब का मिट
गया होता तेरी रहमत ने मुझे सम्भाल, रखा है। हर चीज हद में ही अच्छी
लगती है। मगर तुम तो बेहद अच्छे, लगते हो - बेहद अच्छे लगते हो।

— सन्त अराधना पुरी

भजन

जिन्दगी यूँ ही चलेगी रंग बदले गा जहाँ।
बन्दगी कर ले कि मौका फिर मिले गा कब यहाँ।।

ख्वाबे उलफत में ए गाफिल किस कदर सोया हुआ।
माया की रंगीनियों में रात दिन खोया हुआ।।
जिन्दगी यूँही

लौट कर जीवन का इक पल फिर कभी मिलता नहीं।
जो करे जग से मोहब्बत, तो प्रभु मिलता नहीं।।
जिन्दगी यूँही

आरजू पूरी किसी की उम्र भर होती नहीं।
जो प्रभु का हो गया फिर आरजू होती नहीं।।
जिन्दगी यूँही

नाम की अनमोल दौलत, सतगुरु के पास है।
दास की बिगड़ी बनाना बस उन्हीं के हाथ है।।
जिन्दगी यूँही

तर्ज : ये मेरा दीवानापन है या मोहब्बत का सरुर

—चन्द्रप्रकाश धमीजा

प्रभु-प्रेम पियूष



महापुरुष बतलाते हैं कि संतों की महिमा बहुत भारी है। सन्त जीव को कल्याण का मार्ग बतलाते हैं। जीवन को जीने की राह बतलाते हैं। हमें जीवन में किस प्रकार चलना चाहिए, इसका सूत्र समझाते हैं। कौन-2 से कार्य हमें करने चाहिए और किन-2 कर्मों के करने से हमारा जीवन बिगड़ सकता है - सब समझाते हैं। जब हम संसार में आए हैं तो हमें इस पार लगाने का यत्न भी करना है और संसार के भी सारे काम करने हैं। महाराज जी हमें बताया करते थे कि जब तक जीव के अन्दर भक्ति का भाव नहीं तो उसका जीवन पशु के समान है। जो जानता ही नहीं कि भगवान का अस्तित्व भी है। वो जीव जिसको खाने का ढंग नहीं, पीने का ढंग नहीं, पहनने का ढंग नहीं, यह भी नहीं पता कि हमें मल कहां त्याग करना है, तो पशु ही तो हैं। इस जीवन को हमने बदलना है। महापुरुषों, सन्तों के संग रह कर हमने अपने जीवन को बदलना है। महापुरुष बतलाते हैं कि -

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनः आध।
तुलसी संगत साधु की, कटे कोटि अपराध।।

और बतलाते हैं -

बिन सत्संग विवेक ना होई।
राम कृपा बिन सुलभ ना सोई।।

अर्थात् जब तक प्रभु की कृपा नहीं होती, हमें सत्संग भी सुनने को नहीं मिल सकता। घर बैठे तड़फते हैं कि शांति कहाँ है? हमारा सारा जीवन ऐसे ही निकल जाता है। अगर सत्संग में जाते हैं तो सारा दिन के लिए राहत मिलती है। हमारी आत्मा प्रसन्न हो जाती है। सुख की अनुभूति बनी रहती

है। हमारा मन शांत रहता है। जीवन को सफलता का अनुभव होता है।

खाना पीना तो पशुओं का भी काम।

बन्दे में बस फर्क यही, जपे हरि का नाम।।

श्री राम चरितमानस में यह स्पष्ट लिखा है : “भक्ति बिना नर सोहे ऐसे, लवण बिना बहु व्यंजन जैसे।” जब हम तरकारी बनाते हैं, मगर उसमें नमक डालना भूल गए तो वह सब्जी हमें स्वाद नहीं लगती। ऐसे ही मानुष जीवन है। जब तक जीवन में भक्ति भाव नहीं हैं तब तक जीवन फीका-2 सा है। हर समय मनुष्य दुखी रहता है। सत्संग व प्रभु का ज्ञाव व नाम चर्चा ही जीवन को बनाते हैं। ये कान सत्संग श्रवण के लिए मिल हैं। आँखें गुरु दर्शन के लिए मिली हैं, पाँव हमें सत्संग में जाने के लिए मिले हैं। अपने शीश को प्रभु चरणों में नवाएं और अपनी गलतियों के लिए क्षमा माँगें। प्रभु चरणों में आकर स्वयं को बदल डालें। सद्बुद्धि देने वाला कौन है? महापुरुष ज्ञान देने वाले कौन हैं? महापुरुष रास्ता दिखाने वाले कौन हैं? महापुरुष भगवान का ही तो रूप है। उनके चरणों में जाकर अपने जीवन को बनाएँ। आप राधा को देखते हो, वो भी तो हमारे जैसी ही है। मीरां को देखो, उसको कृष्ण नाम की लगन लग गई तो सर्वस्व छोड़ कर, महलों को छोड़कर गीत गाने लगी -

मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो ना कोई।

जांके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।

तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई।।

छाँडि दी कुल की कानि कहा करिहै कोई।

संतन ढिंग बैठि-बैठि लोक लाज खोई।। मेरा तो

सुदामा को देखो! कितना प्रभु से प्रेम था। मिलकर पढ़ते थे, खाते थे, पीते थे। तब तक कुछ ज्ञान नहीं था। बड़े हुए तो कृष्ण राजा बन गए

और सुदामा भिखारी। एक दिन सुदामा की पत्नी सुशीला ने आग्रह किया भगवान कृष्ण तुम्हारे मित्र हैं, जाओ उनसे कुछ माँग लाओ। बच्चे भूख से व्याकुल हैं। हमारा जीवन ऐसे ही व्यतीत हो रहा है। लोग जाते हैं उनके पास तो झोलियाँ भर लाते हैं। तुम क्यों नहीं जाते? सुदामा सकुचा गए कि वो मेरे मित्र हैं और उन्हें भेंट करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं। किस मुख से जाऊँ? सुशीला ने कहा - मैं पड़ोस से कुछ माँग कर लाती हूँ। सुशीला पड़ोस से थोड़े चावल माँग कर लाई और बोली यही चावल उन्हें भेंट कर देना। सुदामा पोटली में चावल लेकर मित्र से मिलने चले। वहाँ पैदल जाने में पाँवों में छाले पड़ गए। कटे हाल जब कृष्ण से मिले तो भगवान पूछने लगे - सुदामा तुम्हारी ये दशा?

देख सुदामा की दीन दशा, करुणा कर के करुणा निधि रोए।

पानी परात को हाथ छुओ नहीं, नयनन के जल से पग धोए।।

अपने मित्र की ऐसी दुर्दशा देख, श्री कृष्ण की आँखों से अश्रु की धारा बह उठी और उन्हें आँसुओं से सुदामा के चरण धो दिए। अपने साथ आसन पर बिठाया, वस्त्र पहनाए, खाना खिलाया और पास खड़ी रानियाँ देख रही हैं, यह कैसा मित्र है इनका? रुक्मणी ने कहा - नाथ लाइये मैं चरण धोती हूँ। भगवन बोले - नहीं यह मेरा सखा है, मेरा मित्र है, इनके सारे कार्य मैं ही करूँगा।

जिन प्रेम कियो, तिन ही प्रभ पायो।

जिसने भी प्रभु से प्रेम किया, भगवान उसकी भावना को समझते हैं। यह मेरा मित्र कितनी लम्बी यात्रा पैदल करके आया है। पाँवों में काँटे लगे हैं, छाले पड़े हैं। कितनी दयनीय स्थिति है मेरे मित्र की। सुदामा ने कुछ नहीं माँगा फिर भी भगवान उसके अन्तर्मन की बात जान गए और उसके बिना कहे ही उसके लिए महल बनवा दिए। सुदामा जब वापिस गए तो क्या देखा? मेरा घर कहाँ चला गया? मेरी पत्नी कहाँ गई? ये सब कैसे लग रहा है जैसे मैं कहीं और आ गया हूँ? इतना बड़ा महल कहाँ से

आया गया ? सुशीला जब बाहर आई तो कहने लगी - अन्दर आ जाओ यह हमारा ही घर है। उसने सारा महल, वस्त्र, धन दौलत सब दिखाई जो भगवान कृष्ण ने भिजवाई थी। सुदामा देखकर हैरान रह गए।

जिन्होंने प्रभु से प्रेम किया, प्रभु उनके अंग संग है। वो सभी के दुख दूर करते हैं। हम उनके चरणों में न विश्वास करते हैं न ही प्रार्थना। भगवान की कृपा हुई तभी तो घर में सत्संग हुआ। सभी संगत का आना हुआ। सभी को ज्ञान मिला। जब राधा के हृदय में, मीरा के हृदय में वो प्रेम जागृत हो सकता है तो हम सबके हृदय में क्यों नहीं ? क्या हमारे अन्दर भी वही भाव पैदा नहीं हो सकते ? हो सकता है। अवश्य हो सकता है बस प्रयास करना है, विश्वास करना है। वो हमारा जीवन प्रेम से भरपूर कर देंगे जिससे हमारे जीवन की मंजिल हमें प्राप्त हो जाएगी।

— संत निरंतर पुरी जी

श्री अनन्त पर्व पत्रिका

17 मई, 2014	शनिवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
24 मई, 2014	शनिवार	अपरा एकादशी, भद्रकाली एकादशी
28 मई, 2014	बुधवार	अमावस्या
29 मई, 2014	गुरुवार	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ श्री गंगा स्नान प्रारम्भ
06 जून, 2014	शुक्रवार	श्री दुर्गाष्टमी
08 जून, 2014	रविवार	श्री गंगा दशहरा, हरिद्वार
12 जून, 2014	गुरुवार	श्री सत्यनारायण व्रत
13 जून, 2014	शुक्रवार	ज्येष्ठ पूर्णिमा, श्री संत कबीर जयन्ती

— महात्मा सर्वानन्द पुरी

संस्थापक एवं संचालक

श्री अनन्तेश्वर महादेव मन्दिर

शिव तिराहा, गाँधी कॉलोनी, मुजफ्फरनगर, उत्तरप्रदेश

पारस-मणि की प्राप्ति

मन संकल्पों एवं विकल्पों का उदगम स्थान है। जब मन रूपी तालाब में कोई एक डली फँकी जाती है तो न जाने कितनी तरंगें पानी की तरंगों के समान चारों ओर फैल जाती है। जब मन पतन की ओर, अग्रसर होता है तो उस में उठने वाले विचार विकल्पों के रूप में उभरते हैं। मुझे यह मिल जाए, मैं यह पा जाऊँ, यह मेरा है, यह मेरा नहीं है, ऐसा करुं तो ऐसा होगा - यह सब विकल्प है। लेकिन जब मन आत्म उत्थान के लिए चेष्टा करने लगता है तो एक प्रण लेने का प्रयास करता है कि आज मैं सब से-प्रेम से ही बोलूंगा, ये सब संकल्प कहलाते हैं। यह दोनों ही स्थितियाँ सब के मन में उन के गुण एवं स्वभाव के अनुसार आती जाती रहती है। शरीर भले ही वृद्ध हो जाए परन्तु मन सदैव जवान ही रहता है।

एक रसायन-शास्त्री था जिस का नाम था अल्बर्ट मोरीसन। वह यूरोप का रहने वाला था। एक बार उस के मन में ऐसे विकल्प उठे कि उन्होंने मोरीसन को बेचैन कर दिया। उसका मन चाहने लगा कि उस के पास अपार धन हो। कोई ऐसी धन-सम्पत्ति उसे प्राप्त हो जिस से वह मानवों की सेवा कर सके और वह 'दरिद्री-नारायण' कहलाने लगे। कोई भी व्यक्ति उसे कंगाल दिखाई न दे। उसने इस पर गहन विचार किया। रसायन शास्त्री तो वह था ही, इस लिए उस ने कई प्रकार की धातुओं पे रसायनिक क्रिया कर के सोना बनाने की विधि पर विचार किया। ताकि जब अत्याधिक सोना मेरे पास तैयार हो जाएगा तो मेरी इच्छा की पूर्ति हो सकेगी। जब अपनी इस सोच को उसने आगे बढ़ाया तो उसे आभास हुआ कि इस सारे कार्य को शुरू करने से पूर्व अत्याधिक धन एवं परिश्रम की आवश्यकता होगी, लेकिन फिर भी सोना बन पाए यह आवश्यक नहीं है। मोरीसन ने भारत के बारे में सुना था कि वहाँ एक पारस मणि पाई जाती है जो एक ऐसा पत्थर है जिसे लोहा छू जाए तो वह सोना बन जाता है। ऐसी ही मणि किसी सन्त ने सन्त रविदास के पास अमानत के रूप में रखी थी। लेकिन सन्त रविदास ने उसका प्रयोग तो क्या करना उसे छूआ तक नहीं।

जब वो संत यह अनमोल पत्थर लेने के लिए उनके पास आए तो उन्होंने कहा, "भई जहां तुम ने रखी थी वहीं से उठा लो" मोरीसन ने सोचा कि यह मणि भारत में ही मिल सकती है और उसे यही मणि ही चाहिए। उसे लगा कि जैसे उस ने वह मणि प्राप्त कर ली हो और वह तीनों लोकों का स्वामी बन गया हो।

भारत आ कर उस ने पारस मणि की खोज प्रारम्भ कर दी। वह बड़े-2 वैज्ञानिकों, रसायन शास्त्रियों व तत्व वेताओं से मिला। सभी ने यही कहा कि किसी ने कभी आज तक ऐसी मणि को देखा नहीं। यह मणि तो ऋषियों मुनियों के पास ही होती है। वही रिद्धी-सिद्धी के मालिक होते हैं। और जिस पर वह प्रसन्न हो जाएँ उसे ही वह मणि दे सकते हैं। उसने पूछा, "ऐसे महापुरुष कहां मिलेंगे?" सब ने बताया कि वो तो पतित पावनी गंगा के किनारे, हिमालय पर्वत की कंद्राओं में बैठ कर तपस्या में लीन रहते हैं। उन्हें जग व जग की वस्तुओं में कोई लगाव नहीं होता। उसने सोचा कि वह भी वहां जा कर किसी महान सन्त की सेवा कर के यह मणि अवश्य प्राप्त करेगा। चल पड़ा हिमालय की ओर कभी ट्रेन से, कभी बस से और कभी पैदल खोजते-2 एक दिन एक सन्त के दर्शन किए जो ध्यान में समाधि लगाए थे और उनके चहरे से नूर टपकता था। उस कौपीन धारी साधु के पास सामान के नाम पर केवल एक तुम्बरी पास पड़ी थी। मोरीसन खिंचा खिंचा सा उस ओर चल दिया और प्रणाम करके धूनि के पास बैठ गया और बाबा की समाधि खुलने का इन्तजार करने लगा।

आज मन को कुछ धीरज है, शायद उसका यहीं पर ही काम बन जाए। बाबा ने आंखें खोली। मोरीसन को सन्मुख देखकर पूछा-याचक मन की क्या इच्छा है? "महाराज, मैं भिखारी नहीं एक रसायन शास्त्री हूँ," - मोरीसन ने गर्व से कहा। उसके मन में यह प्रबल धारणा थी कि जो दूसरों के दरिद्र दूर करने के प्रयास में पारस माणि प्राप्त करने की इच्छा रखता हो, वह याचक नहीं हो सकता। साधू ने मुस्कुरा कर कहा- जिन कामनाओं के कारण तुम इतना धन समय व परिश्रम लूटा रहे हो वह एक याचक की ही होती है। अगर यही धन, समय व परिश्रम तुम प्रभू भक्ति में

लगा देते तो सोने पे सुहागा हो जाता । ”

मोरीसन बोला, “महाराज मुझे यही सोना ही चाहिए, सोना नहीं, सोना बनाने वाला पारस चाहिए। उसने साधु बाबा के चरण पकड़ लिए क्यों कि उसे अपने कार्य सिद्धी की आशा बंध रही थी। बाबा कहने लगे, “पारस ? पारस तो नहीं है मेरे पास – शायद किसी के भी पास न हो”। “महाराज ! कृपा करें मैं एक बार इस मणि के दर्शन करना चाहता हूँ। मैं उस पारस से सोना बनाकर सब की दरिद्रता दूर कर दूंगा। गरीबों अनाथों के लिए औषधालय व खाने पीने का प्रबन्ध करूंगा। सारे समाज को सुधार दूंगा। ” मोरीसन ने कहा।

बाबा कहने लगे, ‘ओह ! जिन के धन नहीं है क्या तुम उन्हें दरिद्री समझते हो ? मुझे भी तुम एक दरिद्री से अधिक क्या समझोगे ? तुम एक पारस से सारे संसार का दरिद्र दूर कर सकते हो तो उस भगवान के पास पारस ही पारस हैं वो इस संसार की दशा नहीं बदल सकते ? ”

“पारस ही पारस ? ” मोरीसन ने आश्चर्य युक्त हो कर पूछा। “हाँ ! भगवान ने यह मानव जन्म पारस के रूप में प्रदान किया है। यह जन्म, आलौकिक शक्तियों से युक्त है। परन्तु स्वयं मनुष्य इन शक्तियों को भूल कर मन के वशीभूत होकर एक याचक बन बैठा है। इसकी स्थिति भिखारी जैसी हो गई है, प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ मांगता ही रहता है। मायावी झिलमिल ने इस की दशा दीन-हीन कर दी है। प्रभु की कृपा पर सन्तुष्ट रहना, वह पारस है जिस से उस के पास सन्तोष रूपी धन हमेशा पास रहता है और उसे याचक नहीं बनना पड़ता, कभी दरिद्रता का आभास भी नहीं होता व न ही उस के जीवन में किसी वस्तु का अभाव रहता है। – बाबा ने कहा ! साधु के वचनों से मोरीसन को अपने भीतर एक परिवर्तन की अनुभूति प्रतीत होने लगी। भीतर से आवाज आई – यह सन्तोष धन ही पारस होगा। यही सन्तोष धन ही प्राप्त करना चाहिए।

बाबा ने देखा कि मोरीसन का हृदय परिवर्तन हो रहा है। उन्होंने कहा, “जाओ वत्स ! रेलगाड़ी द्वारा कलकत्ता लौट जाओ। अगर फिर भी

तुम्हें पारस मणि की आवश्यकता प्रतीत हो तो मेरे पास लौट आना।”

आज्ञा मान कर मोरीसन वापिस लौट आया। वापसी में प्रथम श्रेणी के उसी डिब्बे में एक अन्य व्यक्ति, जिस के हाथों में हीरे जवाहरात की कई अगूठियां थी व वह व्यक्ति, किसी राज परिवार अथवा धनाढ्य व्यापारी प्रतीत होता था सफर कर रहा था। मुख से अत्यन्त दुखी प्रतीत हो रहा था। एक स्टेशन पर गाड़ी रूकी तो एक याचक, बड़ी ही दीन अवस्था में कराहता हुआ, उस व्यक्ति से एक पैसा देने की याचना करने लगा। सेठ ने बड़े ही कर्कश स्वर में उसे फिटकार दी - “चल भाग जा, न काम न धाम, आ जाते है खून चूसने।” मोरीसन ने देखा, और स्वयं एक रूपया अपनी जेब से निकाल कर उस गरीब को दे दिया। मोरीसन के दिमाग में साधु बाबा की बातें गूजनें लगी। सोचने लगा कि इतना बड़ा सेठ है फिर भी दुखी है शायद इस के पास सन्तोष का धन नहीं है। कलकत्ता पहुंचे। अगले दिन अखबार में आया तो मुख पृष्ठ पर खबर लगी थी। अमुक व्यापारी को अरबों का घाटा पड़ने से उसने आत्म हत्या कर ली जब कि अब भी उस के पास करोड़ों रूपये व कई बंगले व कोठियां थी। यह वही व्यापारी था जो कल डिब्बे में उसके साथ था।

ओह ! करोड़ों रूपये होने पर भी जो मालिक कंगाल है तो दरिद्री कौन होगा। महात्मा जी ने ठीक कहा था मुझे याचक। एक वो याचक था जो रास्ते में एक रूपया पा कर भी कितना प्रसन्न हो गया। वास्तव में जिस को संसार का धन जितना अधिक चाहिए वह उतना बड़ा याचक व दरिद्री है। वास्तविक धन तो संतोष का धन है। जिसे पाने के बाद किसी अन्य धन की आवश्यकता ही नहीं रहती। आज उसे पारस-मणि मिल गई, जो ज्ञान बाबा ने दिया। अब उसे किसी और पारस-मणि की आवश्यकता नहीं थी इस लिए वह यूरोप लौट गया।

- चन्द्र प्रकाश धमीजा

- ★ दिनांक 7 अप्रैल 2014 दिन सोमवार को श्री अद्वैत स्वरूप अनन्त आश्रम के प्रांगण में हमारे परम आराध्य देव श्री परमहंस अद्वैत मत के अद्वितीय आधार स्तंभ श्री प्रथम पातशाही महाराज श्री परमहंस दयाल जी महाराज जी के पावन जन्मोत्सव की पूर्व संध्या पर वार्षिक संत समागम का आयोजन किया गया। इस आयोजन को संत अलख पुरी जी एवं संत निरंजन पुरी जी एवं सन्त अराधना पुरी जी के सकुशल संचालन में एवं परमपूजनीय संत अगम पुरी जी की अध्यक्षता में बड़े ही सुंदर ढंग से आयोजित किया गया। इस संत सम्मेलन में संत बेअंत पुरी जी, संत निवैर पुरी जी, संत सुखसागर पुरी जी, संत शिवपुरी जी, संत अनुराग पुरी जी, संत सनातन पुरी जी ने अपनी वाणी द्वारा सर्व संगत को अमृत रस पान करवाया आस पास की सर्व साध संगत ने भाग लिया। इस भण्डारे में श्री गुरु महाराज जी की पावन महिमा पर सर्व संत मण्डल ने प्रकाश डाला एवं दिल्ली, NCR तथा आस पास की साध संगत ने भाग लिया।
- ★ श्री श्री 1008 श्री प्रथम पातशाही महाराज जी के पावन जन्म स्थान छपरा में भी दिनांक 7 अप्रैल को भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। इस आयोजन का संचालन परम पूजनीय स्वामी सार विवेकानन्द जी की अध्यक्षता में किया गया। इस आयोजन में श्री गुरु मंदिर नंगली साहिब के पूज्य संत समाज एवं साध संगत ने भाग लिया।
- ★ कुरुक्षेत्र आश्रम में भी दिनांक 8 अप्रैल 2014 दिन मंगलवार को मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्री राम एवं हमारे हृदय सम्राट परमहंस दयाल जी महाराज जी का परम पावन जन्मोत्सव बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया। इस आयोजन में परमपूजनीय श्री महाराज संत प्रकाश पुरी जी ने बड़े ही सुंदर भावों से श्री दादा

गुरुदेव जी के एवं भगवान राम जी के जीवन पर प्रकाश डाला एवं सर्व संगत को निहाल किया। इस आयोजन में श्री रामचरितमानस पाठ का भोग डाला गया एवं संत निर्विकार पुरी जी महाराज एवं संत संतोष पुरी जी ने अपने भजनों एवं सत्संग द्वारा सर्व संगत को निहाल किया। इसके पश्चात भण्डारे का आयोजन किया गया। यह समस्त आयोजन पंडित हरबंस लाल शर्मा जी एवं लीला माता जी और भी अन्य सहयोगियों के अथक प्रयासों से हुआ।

- ★ दिनांक 14 अप्रैल 2014 दिन सोमवार को श्री परमहंस मन्दिर चाँदपुरा यमुनानगर में भी श्री दादा गुरुदेव जी का पावन जन्मोत्सव मनाया गया। इस सम्पूर्ण भण्डारे का आयोजन संत निर्भय पुरी जी के संचालन में सम्पूर्ण साध संगत यमुनानगर एवं जगाधरी द्वारा किया गया। इस पावन भंडारे में परम पूजनीय संत अगम पुरी जी महाराज जी की अध्यक्षता में श्री गुरु महिमा का गुणगान हुआ।
- ★ श्री परमहंस अद्वैत मत के अद्वितीय आधार स्तंभ श्री श्री 1008 श्री नंगली निवासी भगवान जी का परम पावन निर्वाण दिवस 15, 16, 17 अप्रैल 2014 को श्री गुरु मंदिर नंगली साहिब में बड़े ही भावपूर्ण ढंग से मनाया गया। दिनांक 16 अप्रैल की रात्रि में श्री नंगली साहिब में श्री गुरु महाराज जी के सर्व सन्त मंडल ने अपनी भाव-भीवी श्रद्धाजलि अर्पित की। दिनांक 17 अप्रैल को वैशाख वदी दूज के पावन दिन ध्वजारोहण एवं दोपहर 12 बजे श्री गुरु महाराज जी की पावन आरती की गई। इस भण्डारे में लाखों लोगों ने सत्संग श्रवण कर अपनी पिपासा शांत की। इस पूरे भण्डारे में गुरु का लंगर अखूट चला।
- ★ दिनांक 19, 20 अप्रैल 2014 दिन शनिवार एवं रविवार को श्री अद्वैत स्वरूप अनन्त आश्रम शास्त्री नगर पिहोवा में वार्षिक

भण्डारे का आयोजन किया गया। इस वार्षिक भण्डारे का आयोजन संत आत्म विभोर पुरी जी के संचालन में एवं परमपूजनीय संत अगमपुरी जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पूर्ण हुआ। इस भण्डारे में संत संतोष पुरी जी, संत सुख सागर पुरी जी, संत ज्ञान पुरी जी, संत त्रिलोक पुरी जी, संत सहज पुरी जी, संत प्रयाग पुरी जी एवं संत धीरज पुरी जी ने सर्व संगत को ज्ञानामृत रसपान करवाया। इस भण्डारे में गुरु का लंगर अखूट चला।

- * दिनांक 26, 27 अप्रैल 2014 दिन शनिवार, रविवार को श्री अद्वैत स्वरूप अनन्त आश्रम झांसा में वार्षिक भण्डारे का आयोजन किया गया। इस भण्डारे का आयोजन संत त्रिलोकपुरी जी के संचालन में एवं परम पूजनीय संत अगम पुरी जी महाराज जी की अध्यक्षता में हुआ। इस आयोजन में संत सन्तोष पुरी जी, संत ज्ञान पुरी जी, संत अनुराग पुरी जी, संत आत्मविभोर पुरी जी, संत प्रयाग पुरी जी, संत धीरज पुरी जी ने सर्व संगत को अपनी वाणी द्वारा भाव विभोर किया। इस आयोजन में झांसा, पिहोवा, इस्माईलाबाद एवं कुरुक्षेत्र की साध संगत ने सत्संग श्रवण कर गुरु का लंगर ग्रहण किया।
- * समस्त भारत वर्ष में सभी चरणों का मतदान निर्वाचन आयोग ने बड़ी होशियारी एवं समझदारी से सम्पन्न किया
- * 16 मई को सभी उम्मीदवारों के भाग्य का होगा फैसला।
- * भारत में अब तक रिकार्ड तोड़ हुआ मतदान एवं युवा वर्ग ने बड़े ही उत्साह के साथ अपने मताधिकार का उपयोग किया।

- दासन दास अमन खुग्गर

साधु होए सहज स्वभाव साधु का कहा विरधा न जाए

सन् 1986 की बात है। मैं अपनी माता श्रीमती गुरादेवी जी के साथ कुरुक्षेत्र आश्रम पर श्री स्वामी जी महाराज जी के श्री दर्शन करने गया। उस समय मेरे मन में विचार था कि मैं आश्रम पर समर्पित होकर गुरु दरबार की सेवा में रहूँ। लेकिन जब हमने श्री स्वामी जी महाराज जी के श्री दर्शन किए एवं मेरी माता जी ने श्री स्वामी जी महाराज जी से मेरे (स्किटू डावर) भेंटा होने की बात कहीं तो श्री स्वामी जी महाराज जी ने आगे से जवाब दिया “एह मुंडा ऐथे नहीं रह सकदा”। तब श्री स्वामी जी ने माता जी को एवं मुझे एक शेयर सुनाया।

फकीरा फकीरी दूर है बड़ी लम्बी ऊँची खजूर है।

चढ़ जावें ते पीवें अमृत रस, गिर जावे ते चकना चूर है।

तदोपरांत श्री माता जी ने दोबारा से प्रार्थना की नहीं आप इसे अपनी चरण शरण में रखो ये आपके दरबार की सेवा अवश्य करेगा। तब श्री स्वामी जी महाराज जी ने मुझे वहाँ आश्रम पर रहने की श्री आज्ञा दी। मैं तब लगभग 5 महीने वहाँ रहा। स्वामी जी महाराज जी ने मेरा नाम स्किटू रख दिया। इसी प्रकार आश्रम पर एक मिंटू नाम का लड़का भी रहता था। तब एक दिन एक भगत जी ने स्वामी जी महाराज जी से प्रार्थना की कि इसका ये कैसा नाम रख दिया है तब श्री स्वामी जी ने फरमाया एक मुंडा है मिंटु ते मिंटा विच काम करदा है ते दूजा मुंडा है स्किटू जेहड़ा सैंकडा च कम करेगा। असी इस करके ऐंदा नाम स्किटू रखया है। तदोपरांत मैं सेवा में रहा एवं कुछ समय पश्चात मैं स्वामी जी को बिना बताये घर आ गया। इसके कुछ समय बाद जब मैं दोबारा कुरुक्षेत्र आश्रम पर गया तो श्री स्वामी जी महाराज बहुत नाराज हुए और फरमाया कि तु सांनू विना दसे ही वापिस चला गया। तब श्री स्वामी जी महाराज जी ने काफी समय तक बात नहीं की। तब परम पूज्य संत प्रकाश पुरी जी महाराज, संत अगमपुरी

जी एवं संत निर्विकार पुरी जी के कहने पर मैंने गुरु दरबार के हर भंडारे पर पहुचना एवं वहां पर श्री गुरु महाराज जी के दरबार की लगभग 3 वर्ष तक सेवा की। तदोपरांत श्री स्वामी जी महाराज जी ने महात्मा विवेकानंद जी से पूछा कि क्या स्किंटू हर भंडारे पर आता है! कुछ सेवा भी करता है या नहीं? तब महात्मा जी ने भी स्वामी जी महाराज जी से कहा कि हां सेवा तां करदा है। तब महात्मा जी ने यह शुभ संदेश मुझे बताया तो मेरे दिल की तिरंगे हिलोरे लेने लगी। सन् 1989 में जब श्री स्वामी जी महाराज शरीरिक रूप में अस्वस्थ हुए तो श्री स्वामी जी महाराज जी ने भंडारे की सेवा के दौरान मुझे इशार द्वारा बुलाया एवं तब परम पूजनीय स्वामी जी महाराज जी ने अपने हाथों से मुझे प्रशाद दिया एवं श्री संत प्रकाश पुरी जी महाराज ने उनके इशारों को समझते हुए मुझे बताया कि स्वामी जी महाराज जी ने तुझे माफ कर दिया है। आज भी मन हतप्रभ रहता है, कि श्री स्वामी जी महाराज जी ने मुझ पर अपार कृपा की और माफ कर दिया। उनकी इस अपार कृपा से आज तक हमारा जीवन गुरु दरबार की सेवा करते हुए व्यतीत हो रहा है और आगे भी ऐसा होता रहेगा। ऐसे थे हमारे भक्त वत्सल प्रभु श्री स्वामी अनन्त प्रकाशानन्द पुरी जी महाराज।

सुरेश डावर (पानीपत)

(स्किंटू)

सतगुरु दी नगरी अरशां तो उतरी
नक्शा क्या खूब बनाया है
नंगली दा राजा मेरा हारां वाला
जिने सौहणा दरबार बनाया है

गंगा, यमुना, सरस्वती, तीर्थों के मिलने वाले स्थान को त्रिवेणी कहते हैं। गंगा जी का पवित्र, यमुना जी का शुद्ध और सरस्वती जी का ज्ञान वर्धक जल जहाँ मिलते हैं वहाँ लाखों, करोड़ों मनुष्य डुबकी लगाकर अपने दुःखों से पापों से छुटकारा पाते हैं और अपने आप को पुन्यों का भागी समझते हैं क्योंकि इन तीर्थों का जल मिलकर स्वच्छ, गुणकारी, रोगों से मुक्ति दिलाने वाला और कामनाओं को पूरा करने वाला बन जाता है। संत महात्माओं, ऋषि मुनियों, योगियों के स्पर्श से उनके आशीर्वाद और वरदान से यहाँ का जल और भी पवित्र, लाभदायक शरीरिक कष्ट दूर करने वाला और आनन्द, चाहे अस्थिर हो, देने वाला बन जाता है। यह तीनों नदियां यहां पहुंचने के लिए कितना लम्बा, कठिन रास्ता तय करती हैं। कितने संत महात्माओं, ऋषियों से मिलती हैं। कितनी वनस्पतियों और उनके गुणों को अपने साथ चलने पर बाधित करती हैं और सबसे जरूरी किसके बनाए रास्ते पर चलकर एक स्थान (त्रिवेणी) में पहुंचती हैं, कुछ विरले ही जानते हैं या जानने की कोशिश करते हैं और उनमें से भी कुछ विरले ही जान पाते हैं।

ऐसे भाग्यशाली विरले प्राणी सोचने लगते हैं कि शरीर को स्वस्थ, स्वच्छ रखना ही क्या अवश्यक है क्योंकि

नहाए धोए क्या भयो जो मन की मैल न जाए,

मीन सदा जल में रहे, धोए बास न जाए।

उन्हें यहां स्नान कर जो शारीरिक दुःखों से छुटकारा मिलता है। कुछ समय के लिए मन और आनन्द मिलता है यह सोचने पर मजबूर करता है कि इससे भी उच्च त्रिवेणी है जहां स्थिर आनन्द और मन का मिलन हो सके। ऐसे सच्चे, सीधे और व्याकुल साधक के लिए खोज और उसमें डुबकी लगाने की अनथक लगन शुरू हो जाती है। साधक सोचने लगता है कि शरीर नशवर है और इसके नष्ट होने के बाद भी हमारी सत्ता पूर्ण रूप से खत्म नहीं

होती। जो दिव्य शक्ति हमें घेरे हुए है जो कण कण में समाई है वह क्या है? ईश्वर प्रेम की तरफ उसकी बुद्धि मुड़ने लगती है। प्रकृति और जीवन में ईश्वरेच्छा की क्रिया का विस्तार होने लगता है, और वह प्रेमी बनकर अपने प्रियतम के बारे में सोचने लगता है।

उसकी सच्ची लगन, उसका समर्पण देखकर उसकी इच्छा पूर्ण करने के लिए और उसकी प्यास बुझाने के लिए ईश्वर खुद एक पथप्रदर्शक, स्वयं सिद्ध दिव्य पुरुष को उसके पास भेजे देते हैं जो उसे उच्च त्रिवेणी तक पहुंचने का रास्ता, उसमें डुबकी लगाने की विधि और लाभ महसूस करने की विधि बताता है जिसे अपनाकर वह खुद सबकुछ पा चुका है। ऐसा महापुरुष वहां पहुंचने के रास्ते को पूरी तरह जानता, पहचानता और समझता है।

यह त्रिवेणी दोनों भौवों के मध्य स्थित है जहां इड़ा, पिंगला और सुष्मना नाड़ियां मूलाधार से शुरू होकर एक लम्बा रास्ता तय करने के बाद यहां पहुँचती है। शिष्य यहां अपने गुरु, जो स्वयं सिद्ध दिव्यपुरुष होता है और यह रास्ता तय कर चुका होता है। की मदद से यहाँ पहुँचने में सफल होता है महर्षि पतञ्जली जी ने अष्टांग योग की विधि बताई है, गुरु ब्रह्मानन्द जी ने ध्यान की विधि बताई है। कुछ संत ज्ञानयोग, कर्मयोग या भक्ति मार्ग को अपनाने की शिक्षा देते हैं। रास्ता लम्बा है, कठिन है लेकिन नामुमकिन नहीं। साधक की सच्ची लगन, उसके अनथक प्रयास, गुरु का आशीर्वाद और भगवान की कृपा इसे आसान बना देते हैं। यहां पहुँचकर प्राणी अधिक आनन्द प्राप्त करता है और अधिकतर समाधिस्थ रहता है। उसे भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। वह हर प्रकार की चमत्कारी शक्तियों का मालिक बन जाता है कि जो दिव्य शक्ति उसे घेरे थी वह उसके अन्दर ही है। वह महसूस करता है कि मैं और मेरा प्रियतम एक जैसे हैं। मनुष्य की प्रकृति ऊँचा उठकर आत्मा की व्यक्त शक्ति बन जाती है।

ऐसा सच्चा साधक विस्तृत होकर भगवान की अवस्था में पहुँचता है। उसके बाद ही भगवान व्यक्ति की आत्मा में उसके अति मानसिक

विकास को पूर्णत्व प्रदान करते हैं। आत्मा उच्च त्रिवेणी से उच्चतम त्रिवेणी में पहुंचती है जिसे सहस्रार भी कहते हैं। यहां प्रकृति, आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है ऐसा मेरा मानना है, अहं समाप्त हो जाता है। मुक्ति प्राप्त व्यक्ति अपनी अध्यात्म सत्ता एवं आत्मा स्वरूप में भगवान के साथ एक होकर अपनी प्रकृति सत्ता में एक ऐसा यन्त्र बन जाता है जो आत्मसिद्धि प्राप्त करने में तत्पर रहता है ताकि मानव जाति (या मानव शरीर) में भगवान पूर्णरूप से प्रस्फुरित हो सकें।

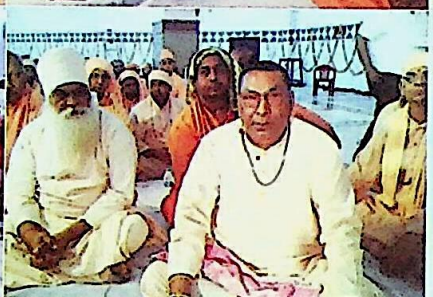
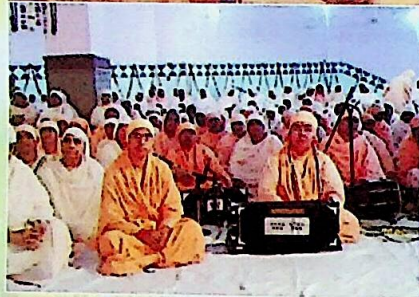
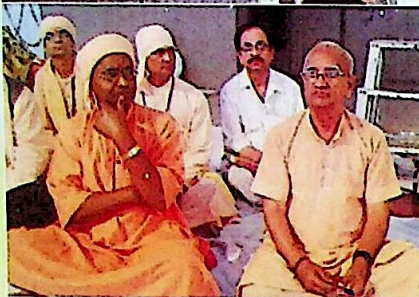
यहां आनन्द ही आनन्द है। द्वन्द्व का खात्मा हो जाता है जो दिव्य शक्ति पहले उसे घेरे थी, फिर अपने अन्दर महसूस हुई वह सोचने लगता है। कि वह मैं ही हूँ। जैसे क्राइस्ट ने कहा था कि मैं और मेरा भगवान एक ही हैं। ज्ञान की एक महत्तर शक्ति ईश्वर, आत्मा, प्रकृति के वास्तविक रूप की ओर खुलने लगती है और वह कह उठता है ॐ तत् सत्।

धारणा ध्यान् समाधि, मिटाए सकल न्याधि

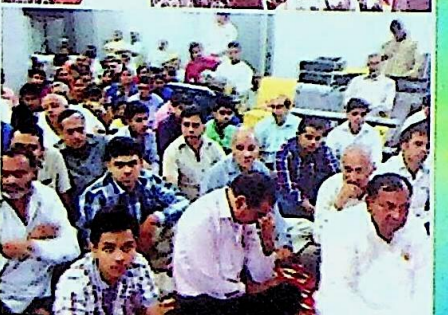
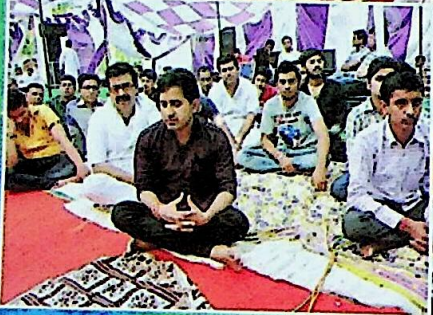
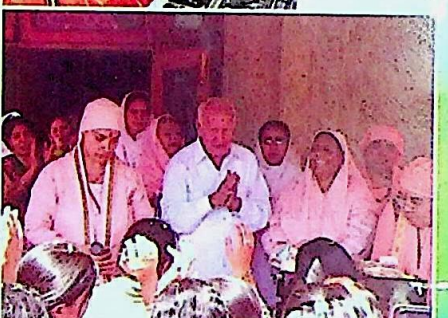
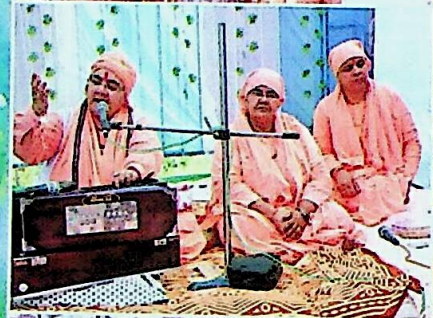
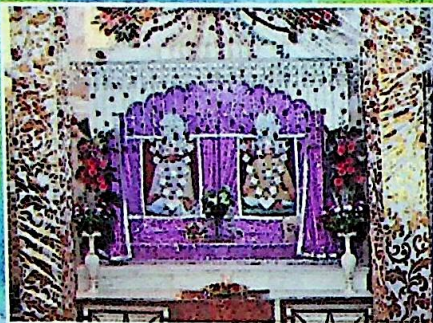
आत्मा पहुँचाने खुदको, पाए अपनी असल उपाधि

डॉ. जीतेन्द्र सैनी

श्री श्री 1008 श्री स्वामी स्वरूपानन्द पुरी जी महाराज जी के 78वें निर्वाण दिवस पर श्री नंगली दरबार की कुछ दिव्य झलकियाँ



श्रीअद्वैत स्वरूप अनन्त आश्रम, दिल्ली एवं पिहोवा में हुए वार्षिक संत सम्मेलन की कुछ दिव्य झलकियाँ



स्वामित्व, प्रकाशक एवं मुद्रक संत प्रकाशपुरी जी, श्री अद्वैत स्वरूप अनन्त आश्रम, राजेन्द्र नगर, कुरुक्षेत्र - 136118 के लिए
सम्पादक संत संतोष पुरी जी द्वारा केजी ऑफसेट प्रिन्टर्स, सलारपुर रोड, कुरुक्षेत्र में मुद्रित